सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोध पत्रिका का अष्टम पुष्प आपके कर कमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोध लेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं व शोध संस्थान द्वारा आयोजित किये गये कार्यक्रमों के चित्र सहित विवरण प्रकाशित किया गया है।

इस अंक में सर्वप्रथम डॉ. नवीन जग्गी द्वारा 'भगवान शिव के द्वादश ज्योतिर्लिंगों' का वर्णन किया गया है। इसके पश्चात् देवर्षि कलानाथ शास्त्री का 'सामाजिक सन्दर्भ में स्वास्थ्यविज्ञान' है, तत्पश्चात् अभिषेक मिश्रा का 'अनुभूति क्या है' विषयक लेख है। डॉ. ओमप्रकाश पारीक का 'काव्यविधात्रिदलम्' कविता की धारा को दर्शाता है। फिर 'संस्कृतशिक्षा शिक्षक वृत्ति का संस्कृतमय' लेख है, 'श्राद्धपक्ष में श्राद्धविज्ञान' को लेकर योगिनी पुष्पलता गर्ग का लेख है। फिर भारत गौरव का 'सत्यमेव जयते' डॉ. रमाशंकर गौड़ की रचना है। तत्पश्चात् कविता द्वय डॉ. बलराम शुक्ल की रचना है। गज़लद्वयी कौशल तिवारी की रचना इसमें सम्मिलित है।

इस अंक में प्रकाशित समस्त लेख प्रबुद्ध विद्वानों का एक संगम है। आशा है सुधीजन पूर्ण मनोयोग के साथ इस ज्ञान गंगा का पान करेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

सम्पादक
डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा